श्री राम चालीसा

कर प्रणाम श्री गणेश को
मांगू गुरू से वरदान |
दीजो बुद्धि इस मूढ़ को
गा सकूँ राम गुणगान ||

***

जय रघुवीर शूर दाशरथी |
कौसल्यासुत महा पराक्रमी ||

दिनोद्धारक सीतापति |
जग उद्धारक विश्व स्वामी ||

कियो धरणी पर अवतरण |
काज न एक रावण मारण ||

सज्जन पालन धर्म रक्षण |
अथवा राक्षस संहारण ||

हेतु मात्र एक रघुपति का |
हों आदर्श मानव जाती का ||

पति भ्राता पुत राम जैसा |
पिता राजा व्यक्ति न हो सका ||

देवे न राम कभी प्रवचन |
जिये किन्तु आदर्श जीवन ||

ध्येय एक कर्तव्य पालन |
रखना नित दूजों का ध्यान ||

दया निधि करुणा सागर |
एक वचन राम धनुर्धर ||

एक पत्नी राम सियावर |
लक्ष्मण का बंधु प्रियवर ||

सूर्यवंश में शिशु राम पधारे |
देख राम मुख शशि भी लाजे ||

मात पिता के मन बहलाएँ।
नगर जनों के दिल पर छाएँ॥

लक्ष्मण अग्रज रघुत्तम राम।
भरत शत्रुघन प्रिय श्रीराम॥

गुरू वशिष्ठ शिष्योत्तम राम।
शस्त्र शास्त्र कला ज्ञानी राम॥

विश्वामित्र संग वन में जावे।
ऋषि मुनियों का रक्षण करे॥

अनुज संग राक्षस संहारे।
देवी अहिल्या को उद्धरे॥

जनकपुरी शिव धनु को तोड़े।
जनकसुता से बंधन जोड़े॥

वचन पिता का राम निभाए।
राज्य अयोध्या का ठुकराए॥

दुखी भरत को राम समझाए।
दे पादुका बंधुहट निभाए॥

जाए दण्डकारण्य नदी पार कर।
मांझी गुहक को धन्यवाद देत॥

बांध कुटी रहे पंचवटी में।
हुए प्रिय वनवासियों में॥

बेर शबरी के झूठे खाए।
यज्ञ तप ऋषियों के राखे॥

आयी शूर्पणखा मोहित हो कर।
कहे छोड़ सिया बन मेरा तू वर॥

बोले राम लखन को बुला कर।
सिखा सबक इसे दण्ड दे कर॥

देखत कांचन मृग को जानकी |
कहे पकड़ लाइए न नाथ जी ||

मृगरूप मरे मारीच मायावी |
लौट राम पाए गायब जानकी ||

गजब भार्या विरह सतावत |
बन घूमे सिया सिया पुकारत ||

विद्ध जटायू गिद्ध कहत |
रावण सिया हरण करत ||

वानर सेना प्रभु जुटाए |
प्रस्थान दूर लंका को करे ||

सागर पार बजरंग को भेजे |
सीता को स्वमुद्रिका दिलाए ||

करे जब कपिवर लंका दहन |
युद्ध पुकारे कृद्ध रावण ||

रण में आहत पड़े लक्ष्मण |
लाए कपीश त्वरित संजीवन ||

करे राम रावण का हनन |
लौटे अयोध्या विजयी हो कर ||

राम राज्य बने प्रजा राज्य |
पत्नि निंदा सुने फिर असह्य ||

करे पुत्र गर्भित पत्नि त्याग |
रहे सुत जाया सहवास वंचित ||

प्रजानुनयी कर्तव्य कठोर |
अश्वमेध याग करे रघुवीर ||

पश्चात्ताप दग्ध प्रजाजन |
जब लौटे सिया लव कुश ||

अन्याय निवारण कारण |
भूमिसुता करे भूमि प्रवेश ||

ले श्रीराम दायित्व सम्पूर्ण |
करे शरयु में देह समर्पण ||

विशुद्ध चरित्र आदर्श जीवन |
राम धर्माचरण श्रीरामायण ||

***

साधु संत मुनि ज्ञानी विरचित |
राम कथा मन भाई ||
जन जन को युग युग में यह |
सुखद होय फल दाई ||

***

सियावर रामचंद की जय

पवनसुत हनुमान की जय

उमापति महादेव की जय

गोपाल कृष्ण महाराज की जय

अम्बा माता की जय

हरि: ॐ

***

- नारायण

११/११/११